Bholanatha Dardi
Khuna ke amsu

खूनके आंसू

प्रकाशक—बाबू सूर्यपालसिंह * लेखक भोलानाथ दर्जी ।

मूल्य -)॥

Printed at the Central New Pres-134 B Machna Bazar Street. Calcutta
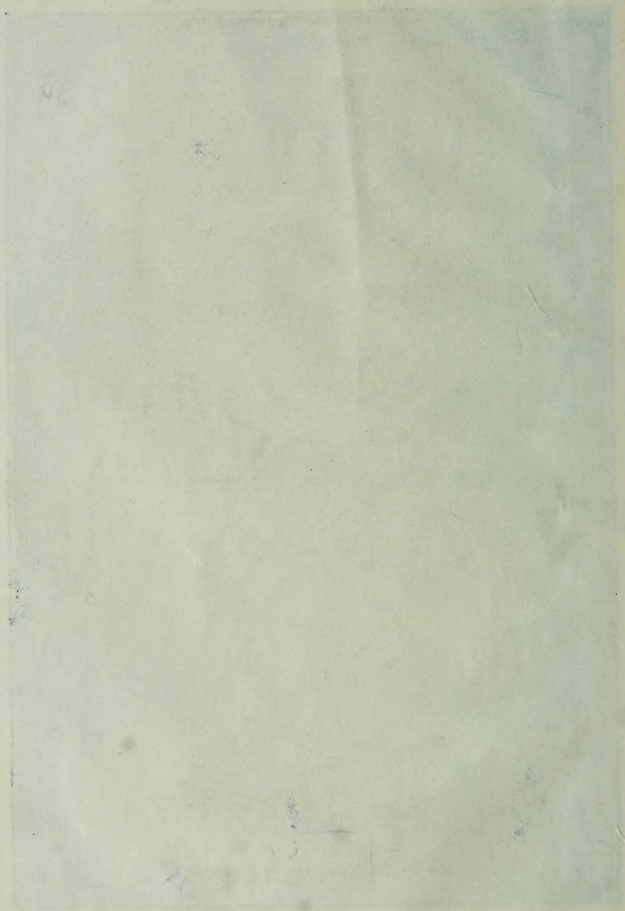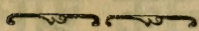
खूनके आंसू

ले॰ तथा संग्रहकर्ता

भोलानाथ दर्दी ।

प्रकाशक :—

बाबू सूर्य्यपाल सिंह

मु॰ चातर पो॰ बबुरा,

(जि॰ आरा)
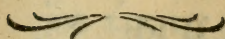
खूनके आंसू

१

लेखक—भोलानाथ "दर्दी"

भगतसिंह ! जिन्दावाद का,
लगता था नारा यारोंमें ।
जब चले भगत होनेको कत्ल,
छाई मुर दनी हत्यारों में ।
हंस कर सुखदेव भगतसे कहें,
मुझे भाई पहले होने दो शहीद ।
हम भगतके भक्त हैं सुन रकीब,
हमे पहले चढ़ाओ दारोंमें ।

शेर

क्या अदां सुखदेवमें थी चढ़ गये जब दारमें ।
लग रहे थे मोरचे सैय्यादके तलवारमें ।
कत्ल कर कातिल भगतके भक्तको जल्दी जरा
टुकड़े २ हो गइ सुनकर छुरी जल्लादकी ।
जिस वक्त दार पै गये भगत,

ललकार वृटिश का नाश कहा ।
हो आंय गर्क दुश्मन मेरे,
कह तजा प्राण हत्यारों में ।

शेर

कयामत हो गई बरपा जमीं थर्रा उठी उसदम।
मेरे प्यारे भगतका नगमा हो पढ़ने लगे उसदम
फरीस्ते हांथ मलते थे शवा सरको पटकती थी
जमीनों आसमांपर छा गया एकबारगी मातम
थर्राया फलक उठी कांप जमीं,
लाहौर की जेलसे निकली शदा ।
हो गये शहीद भगत वो गुरू,
ये धूम है "दर्दी" बाजारोंमें ।

२

आजादीका दीवाना था मस्ताना भगतसिंह ।
एसम्बली में घुस गया दर्राना भगतसिंह ॥
सन उन्निस सै उनन्तिस और अप्रैल आठके,
बम मारके डटा रहा मरदाना भगतसिंह ।
है उसको फांसीका कलक हिन्दोस्तानको,

बस छोड़ गया दुनियांमें अफसाना भगतसिंह।
है बच्चे बच्चेकी जबांपर उस्का फिसाना।
वो शेरे नर पंजाब दिलेराना भगतसिंह।
एसम्बलीको मिटिंगमें बम फेंकके यारों,
एक बाल खुदी कर गया मरदाना भगतसिंह।
गैरोंका मुसीबतमें फंसा देखके यारों,
अपनी ही जां पै खेल गया दाना भगतसिंह।
लाहौरके थानोंमें पर्चे लाल बांट के,
कहता था सितम अब कभी मत ढाना भगतसिंह
हड़ताल मनाइ गई हिन्दोस्तानमें,
बस कर गया एक आलमका दीवाना भगतसिंह
हड़ताल भूख जेलमें की तीन महीने,
बे आबो दाना जिन्दा रहा दाना भगतसिंह।
फिर भी तो सात पौंड वजन और बढ़ गया।
बस खूने दिल पिया लिया गम खाना भगतसिंह
कहती थी यूं सरकार के तुम माफी मांग लो,
पर बन गया आजादीका परवाना भगतसिंह।
कहती थी यूं सरकारके क्या चाहते हो कह दो

गोली दिखा दो फांसी मत लटकाना भगतसिंह

लाहौरका वो रहनेवाला शेरे बबर दिल,

कर नाम गया दुनियामें मरदाना भगतसिंह ।

सरदार किशनसिंह है उनके पिताका नाम,

मरदोंमें मर्द आकिला और दाना भगतसिंह ।

सुकदेव और राजगुरु और भगतसिंह,

तीनोंका बना स्वर्गमें स्थाना भगतसिंह ।

—देश सेवक ।

२

किस शानसे पहुंचा है सरदार भगतसिंह,

मन्सूर है उस दौरका सरदार भगतसिंह ।

तख्ते पै खड़ा हो रसन चूमके बोला,

कर जेबे गुलू आज ये जुन्नार भगतसिंह ।

सतलजमें तेरी अस्थियां किस तरह न बहतीं,

क्या कम थीं तेरे अज्मकी रफ्तार भगतसिंह ।

हमराह थे सुखदेव भी और राजगुरु भी,

दोनोंने बढ़ाया है तेरा प्यार भगतसिंह ।

—"फिदा" बी० ए० ।

४

चढ़नेको तो वो चढ़ ही गया दार पै लेकिन,

ताहश्र नहीं मरनेका जिन्हार भगतसिंह ।

हामी था तशद्दुदका मगर ये भी तो सच है ।

नामूसे वतनका था परस्तार भगतसिंह ।

कहते हैं कि वह मर गया लेकिन मुझे अब भी,

हंसता नज़र आता है सरदार भगतसिंह ।

—पं० इन्द्रजीतजी शर्मा ।

५

उठा जो जनाज़ा किसी जांबाज़ वतनका ।

आवाज़ मलायकने दी सरदार भगतसिंह ॥

शायद हीं कोई इश्क़में हो तेरे बराबर ।

है तेज़ तेरे इश्क़ की रफ्तार भगतसिंह ॥

तू मुरतकिबे जुर्म था मैं कुछ नहीं कहती ।

हां, कहती हूं था पैकरे एसार भगतसिंह ॥

" उम्मीद "

६

अब तक दरो दीवारसे आती है सदा यह ।

फांसी पै चढ़ाया गया सरदार भगतसिंह ॥

पूछा था ज्यों ही " कौन है सरदार तुम्हारा " ।
अहरार लगे कहने कि " सरदार भगतसिंह "।
इस इश्क़ के दीवानेको एक खेल है मरना ।
यों ही मरे पैदा हो जो सौ बार भगतसिंह ॥

" दर्द "

•

कुरबान वतन पर हुये सरदार भगतसिंह ।
सुहबाये मुहब्बतसे थे सरशार भगतसिंह ॥
होगा--मुझे इन बातोंसे कुछ बहस नहीं है ।
कहते हैं कि था " पैकरे एसार भगतसिंह "॥
जाने भी दो, इस बहसको छोड़ो भी यह बातें ।
था--थाकि नहीं--कौमका बीमार भगतसिंह ॥

" साबिक़ "

८

दरियाफ्त किया मैंने कि क्या हाल है भाई !
आया जो नजर मुझको वो सरदार भगतसिंह॥
हंस कर यह जवाब उसने दिया बादिले महफूज ।
लेता है मजे इश्क का बीमार भगतसिंह ॥

" लाला टेक चन्दजी, ढींगरा

९

थे शमअे वतनके परवाना !

[ले०—डाक्टर महबूब आलम कुरैशी " लुकिमानवी]

हालत न वतनकी पहचाने ।
कहना न किसीका वह माने ॥
लटका दिये आखिर फांसी पर ।
लैलाय वतनके दीवाने ॥
हर आंख बहाती है आंसू ।
अफसुर्दा हैं अपने बेगाने ॥
पामाल हुआ है बागे वतन ।
हर फूल लगा है मुरझाने ॥
कल शब एक पीर खिजर सूरत ।
'महबूब' लगे यों फरमाने ॥
सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु।
थे शम्मए वतनके परवाने ॥

१०

जिसकी मुद्दतसे तमन्ना थी वह दिन आनेका है ।
फिर बहार आयेगा वो ही गुन्चा खिल जानेका है

मुरदा भारतको जिला जायेंगे मरते मरते ।
नाम जिन्दोंमें लिखा जांयगे मरते २ ॥
हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जांयगे मरते मरते ॥
दिल पै दुशमनोंके अपनी जवांमर्दीसे ।
हिन्दका शिक्का बिठा जांयगे मरते मरते ॥
जेल खानेकी भी खुश होके बढ़ायें रौनक ।
एक क्या लाखों बना जायंगे मरते मरते ॥
मातृ भुमिके लिये जान निछावर करदो ।
सबक भारतको पढ़ा जांयगे मरते मरते ॥
भगतसिंह, दत्त, वो सुखदेव राजगुरु प्यारे ।
तुमरा फरमान सुना जांयगे मरते मरते ॥

११

शहीदोंके प्रति ।

भइया नहीं है लाशां यह बे कफन तुम्हारा ।
है पूजने के लायक पावन बदन तुम्हारा ।
दिन तेईसका यह होगा त्योहार एक कौमी ।
बैकुण्ठको हुआ है इस दम गमन तुम्हारा ।

जाया लहू तुम्हारा जानेका यह नहीं है ।
फूले फलेगा इससे देशी चमन तुम्हारा ।
सब भक्तियोंसे बढ़कर उत्तम है देशभक्ती ।
छुटा है बाद मुद्दत आवा गमन तुम्हारा ।
इतिहासमें रहेंगी कुरबानिया तुम्हारी ।
तुमपर फखर करेगा प्यारा वतन तुम्हारा ।

—दर्दी ।

१२

जा रहे हैं उनसे अब आंखें लड़ानेके लिये ।
जिन्दगीका ख्वाबे गफलतसे जगानेके लिये ।
लीजिये बैठे बिठाये फिर उम्मीदें जग गईं ।
आपसे किसने कहा था दिल लगानेके लिये ।
ओंठ जब कांपे तो आंसू डबडबा आये मेरे ।
दास्तांका आखिरी टुकड़ा सुनानेके लिये ।

शेर

दर्द है दिलके लिये गम है मेरे दमके लिये ।
और ये खूने जिगर दीदये पुरनमके लिये ।
मुझको अब क्यों न रुलाये तेरे मिलनेकी खुशी

ईद जाती है जमानेमें मुहर्रमके लिये।
गर्क इशरत होके जानेसे कहीं बेहतर "दर्दी"
दस्त इवरत होके मर जाना जमानेके लिये।

—भोलानाथ "दर्दी"।

१३

मिटेंगे देश पै अपने यही अब दिलमें आई है।
करें आजाद भारतको यही एक धुन समाई है।
नहीं है ज्ञात क्या उनको कि भारत बीर भूमी है
करें बरबाद हम इनको कि जिनसे दुसमनाइ है
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यानमें रखना।
मिटेंगे हम मिटा करके सपथ हमने यह खाई है
हैं क्या शै जेल औ फांसी डराते हो हमें जिनसे
करें आदर्शपर तिल तिल न वह भी दुःखदाई हैं
करो जुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल न जाना
नहीं अपमान सह सकते जो भारतके शैदाई है।

१४

ये क्यों बेड़ीकी चारों ओरसे झनकार होती है।
नये सरसे हमारे सर पै क्यों तलवार होती है।

अजब यह वख्त आया है कि बच्चे मुस्कुराते हैं
धड़ाधड़ गोलियोंकी उन पै जब बौछार होती है
अजब गांधीका यह मन्तर सभीके दिलमें बैठा है
गुलामोंकी जहांमें जिन्दगी बेकार होती है।
वो ज्यों ज्यों राहमें कांटें बिछाते जाते हैं उनके
अजब हैरत है उनकी तेज ही रफ्तार होती है।
नजर दुनियांमें ऐसे ही नज्जारे आने लगते हैं।
कौम जब जुल्मियोंके जुल्मसे बेजार होती है।
कहां ईमाने खुदगर्जीके बादल छाये रहते हैं।
किसीके मुल्कमें जब गैरकी सरकार होती है।
अरे तूफान जोरों जुल्मके भी देखते रहना।
बहुत ही जल्द किस्ती हिन्दकी अब पार होती है

—प्राप्त दर्दीसे।

१५

❀ रसिया ❀

प्रीतम चलू तुम्हारे संग जंगमें पकड़ूंगी तलवार
भारतके आजाद करूगी। नहीं जेलसे बलम
डरूगी मार खांउगी नहीं मरूगी करू नमक

तैयार। प्रीतम। गांधीजीका हुकुम बजाउ। घर घरमें उपदेस सुनाऊ अपनी बहनोंको समझाऊ। करु खूब प्रचार। प्रीतम। अपना पहेनू कता स्वदेसी। नहीं खरी दू माल विदेसी सुला करैंगे तब परदेसी। हुआ गरम बाजार प्रीतम। मेरी बहनों सुनलो तुम अब। बनो नाइडू सरोजनी सब हों सिल होगा तभी तो मतलब। हो रहा अत्याचार। प्रीतम। चरखेकी मैं तोप बनाऊ। बना सूतके गोले चलाऊ। मानचेस्टरके किलेको ढाउ। पाऊ फते भरतार। प्रीतम। बड़ा सबरेका मीठा है फल। आज नहीं गर मिला मिलै कल हमारी आहोंकी यक हल चल करैंगी धूवांधार प्रीतम नहिं पीछेको कदम हटाऊँ। नहिं माताका दूध लजाऊँ रजपूतीका हुनर दिखाऊँ। कस पांचों हथियार गांधीजीने कदम बढ़ाके। सबकी हिम्मत दई बधाके। रकीब दिलका दिल दहलाके। कर दिया अब मुरदार ीतम

गान्धीजी बन रहे कलन्दर। शशो पंजमें पड़ गये मुनकर होनी हो सो होय बिरादर। कहां करे करतार। प्रीतम--यह रसिया गागाके सुना दूं। जोश जनानोंको भि दिलादू। मुहसे नहीं करके भि दिखा दू। हो गई हू तैयार प्रीतम चलू तुम्हारे संग जंगमें पकड़ूगी तलबार

१६

जेहल न सही फांसी ही सही तुझे दूढ़ हो लेंगे कहीं न कहीं जो हैं चाहनेवाले तुम्हारे सनम तुम्हें ढूढ ही लेंगे कहीं न कहीं। गर जुल्मसे कर देंगे मुझको वो चुप न डरेंगे कसम है खुदाकी मुझे आती रहेगी सदा बंदेमातरम जालिम सुन लेंगे कहीं न कहीं।

शेर। किसीके आका नहीं है तो हम गुलाम नहीं
झुकाके सर करेंगे कभी सलाम नहीं
अहले वतनने उम्र इसीमें तमाम को
किस्मतमें क्या लिखी थी गुलामी गुलामकी
ये तोप दिखाये जाते हैं बन्दूकें चलाई जाती हैं

परवाह नहीं इस मुसीबतको पर उनसे मिलेंगे कहीं न कहीं स्वतंत्र भारत हो रहा आजादीकी देवी पुकार रही ऐ दर्दी दर्द अब दिलसे मिटा इनके पीछे पड़ेंगे कहीं न कहीं।

(दर्दी)

१७

❀ बन्देमातरम् ❀

मोतीलालजी स्वर्ग सिधरे प्रभुजी,
भारत नैया है हाथ तिहारे प्रभुजी ॥टेक॥
छोड़कर हम सबोंको देशसे न्यारा हुए।
आज मर जानेपर उनको जगत अंधियारा हुए।
टूटी भारतके बांह हमारे प्रभुजी ॥१॥
हाय अफसोस एक देशका तारा गया।
देश बन्धु मोतीलाल भारतका सहारा गया।
भारत माताके थे वो दुलारे प्रभुजी ॥२॥
यह शोक भगवन् सर्वदा हृदयसे मिट सकता नहीं
सकल मोतीलालजीको नेत्रसे हटना नहीं।
यही आपसे अरज गुजारे प्रभुजी ॥३॥

——:——

मुद्रक—
शेख कमरुद्दीन,
कमर प्रेस
नं० ५, चितपुर स्पर, कलकत्ता।